साहित्य का नोबेल : 2025

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 360 नवंबर–2025

हिंदी पत्रकारिता की द्वि–शताब्दी के अवसर पर

पत्रकारिता से मीडिया बनने की यात्रा

अशोक वाजपेयी वैभव सिंह रामशरण जोशी
आलोक मेहता प्रियदर्शन किशन कालजयी
(प्रस्तुति : संजय जायसवाल)

कहानियाँ

जनार्दन हर्ष देव अर्चना पैन्यूलि
अली सरदार जाफरी (उर्दू)
बिजय नायक (ओड़िया)

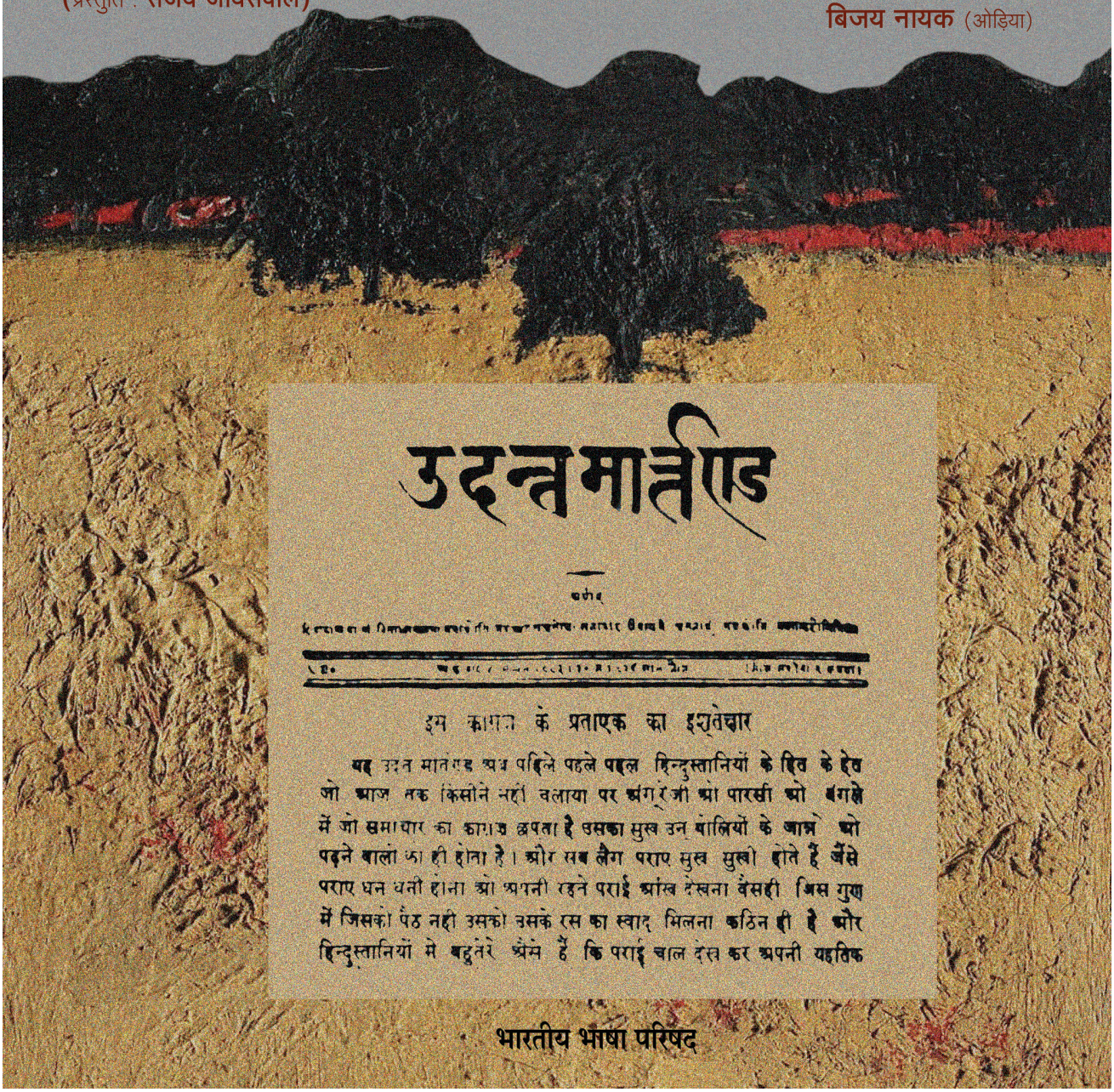

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 31, अंक 360, नवंबर 2025

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

पत्रकारिता का सूर्यग्रहण : **संपादकीय** 5

कहानियां

दस्तूर : **जनार्दन** 12
परोपकार : **हषदेव** 20
तटों के बीच ज्वार : **अर्चना पैन्यूली** 30
आदमजाद (उर्दू) : **अली सरदार जाफरी**
(अनुवाद : **जातिद खान/इशरत ग्वालियरी**) 39
मंत्रणा (ओड़िया) : **विजय नायक**
(अनुवाद : **राजेंद्र प्रसाद मिश्र**) 42

कविताएं

उत्तम पीयूष/यश मालवीय /पन्ना त्रिवेदी/कुमार लव/अशोक अंजुम/ऋतु त्यागी/जयप्रकाश मानस/मनोज साहू निडर/शीला पांडे 46
मलयालम कविताएं : अनुवाद : **शांति नायर** 62

परिचर्चा

पत्रकारिता से मीडिया बनने की यात्रा : **अशोक वाजपेयी/वैभव सिंह/रामशरण जोशी/आलोक मेहता/प्रियदर्शन/किशन कालजयी/**(प्रस्तुति : **संजय जायसवाल**) 65

पुण्यतिथि स्मरण

विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय : पुलिस की गिरफ्त में
: **मृत्युंजय कुमार सिंह** 94

विश्वदृष्टि

साहित्य के नोबेल विजेता : लास्लो क्रास्नाहोरकाई :
(अनुवाद और प्रस्तुतिः **उपमा ऋचा**) 97

समीक्षा संवाद

संस्मरण : जिंदगी अपनी इस शक्ल से गुजरी : **आदित्य विक्रम सिंह**
(अब्दुल बिस्मिल्लाह, लीलाधर मंडलोई और मधु कांकरिया की पुस्तकें) 103

सोशल मीडिया 114

विविध

पाठक संसद/किताबें 116

लघुकथा

इलाज का धंधा : **कैलाश केशरी** 29

बतरस

सिनेमा : साहित्य का संवाहक : **कुसुम खेमानी** 119

देश-देशांतर

टी.पी.राजीवन (मलयालम)/ **फातेना अबू मुस्तफा** (गजा)

मल्टी मीडिया

अज्ञेय के स्वर में उनकी कविता **हां दोस्त** का चित्रपाठ

कविताओं में रेखांकन :
नेट से साभार

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2900/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें
एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।
● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।
● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

पत्रकारिता का सूर्यग्रहण

सत्य का मुंह विज्ञापनों से भरा है, फिर भी बंद नहीं किया जा सकता!

कोलकाता से 30 मई 1826 को प्रकाशित प्रथम हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्त्तण्ड' का यह द्वि-शताब्दी वर्ष है। निश्चय ही देश की संपूर्ण हिंदी पत्रकारिता के लिए यह एक गौरवमय अवसर है जब हम थोड़ा आत्मनिरीक्षण भी कर सकते हैं। 19वीं सदी में कलकत्ता अंग्रेजों की राजधानी होने के कारण हिंदी पत्रकारिता का एक बड़ा केंद्र था।

'उदंत मार्त्तण्ड' का अर्थ है समाचार का सूर्य, जो वर्तमान युग में ग्रहण का शिकार है। मार्शल मैक्लुहान ने कहा था, 'माध्यम ही संदेश है'। यह बदल कर हो गया है, 'शक्ति ही संदेश है'। आज 'माध्यम' शक्तिशाली व्यक्तियों के कब्जे में है, उसकी स्वायत्तता का अंत हो चुका है। नियंत्रण प्रत्यक्ष से अधिक अप्रत्यक्ष है।

हर पाठक और दर्शक को सही खबर पाने का मानवीय अधिकार है, जबकि आज का मीडिया पाठक और दर्शक के मानस को भ्रांतियों से भरता है और उसका बौद्धिक सतहीकरण करता है। यह एजेंडा-आधारित खबरों का प्रसारण करके होता है, सूचनाओं को रोक करके भी। इन दिनों एंबुलेंस से ही आदमी कुचला जा रहा है। फायर ब्रिगेड की गाड़ियां ही आग लगा रही हैं। इसका अर्थ है, सूचना समाज का निर्माण करते-करते हमारी यात्रा 'अज्ञानता से भरा समाज' बनाने की दिशा में है।

ऐसे समाज के लोगों में तकनीकी प्रवीणता बढ़ती है, पर संदेह और तर्क करने की क्षमता का ह्रास होने लगता है। इसका असर लोगों के लोकतांत्रिक मिजाज पर पड़ना स्वाभाविक है, क्योंकि लोकतंत्र और तर्क परस्परनिर्भर हैं। इन दिनों शिक्षित मध्यवर्गीय लोग ही निर्बुद्धिपरक सूचनाओं तथा 'डिसइन्फार्मेशन' के प्रमुख निर्माता हैं। वर्तमान युग में लोकप्रिय टीवी चैनलों के अलावा नि:शुल्क रील्स, वीडियो, यू ट्यूब, पॉडकास्ट, वेबकास्ट, पॉप म्युजिक, एनिमेशन, गेमिंग आदि कई स्ट्रीमिंग सेवाएं उपलब्ध हैं जो